

९९

मर्क

कैसे बताऊँ दुनियाँ को  
 आखों में, मर्क का नूर  
 हूँ वक्त का भी मारा  
 और जीने से मजबूर

सब कुछ लुटाया अपना  
 तेरी शान के खातिर  
 हर दर्द को, सहता रहता  
 तेरे नाम को लेकर  
 मर्क के नाम को लेकर  
 रहमो करम की, एक नजर  
 कर दो मर्क जरूर

हूँ वक्त का --- कैसे बताऊँ ---

मतलब परस्त ईसाने  
 तेरे नाम को बेचा  
 मगरूर है किस शान में  
 ईमान को बेचा

तड़पा के बदना, लेना  
 इस दुनियाँ का दस्तर

हूँ वक्त का --- कैसे बताऊँ ---



अब टूट *ssss* चला *ssss* सब मेरा *ssss*  
 घनघोर *ssssssss* अँधेरा *ssssssss*  
 ना जाने *ssssss* जिंदगी में *ssssssss*  
 कब होगा *ssssssss* सबेरा *ssssssss*  
 हर वक्त, तड़प दिल में है *ssssss*  
 मंजिल है बहुत दूर *ssssssss*  
 हैं *ssss* वक्त -----  
 कैसे *sss* बताऊँ -----

दरिया *ssss* के बीच जिन्दगी *ssssssss*  
 लहरों के हैं झूले *ssssss*  
 कस्ती *ssssss* ने साथ दौड़ा *ssssss*  
 तूफां से हम खेले *ssssssss*  
 अब क्या करें "श्री बाबा श्री" मर्क <sup>दू</sup>  
 ना जाना मुझसे दूर *ssssss*  
 हैं *ssss* वक्त -----  
 कैसे *ssss* बताऊँ